Ganon Ki Tabah Kariyan (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 347
Weekly Booklet : 347

तक़रीबन 22 साल पहले का बयान

गानों की तबाह कारियां

(सफ़हात : 18)

एक क़ौम को बन्दर और ख़िन्ज़ीर बना दिया जाएगा 08
गाना दिल में मुनाफ़क़त पैदा करता है 09
गाने सुनने के नुक़्सानात 10
गाने सुनने की आदत हो तो कैसे ख़त्म की जाए ? 17

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

गानों की तबाह कारियां (1)

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला : **''गानों की तबाह कारियां''** पढ़ या सुन ले उसे फ़िल्में ड्रामे देखने और गाने बाजे सुनने से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ मुझ पर 100 बार दुरूदे पाक पढ़े, जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा तो उस के साथ एक ऐसा नूर होगा कि अगर वोह सारी मख़्लूक़ में तक़्सीम कर दिया जाए तो सब को किफ़ायत करे (या'नी सब को काफ़ी हो जाए) । (حلیۃ الاولیاء، 8/48، حدیث: 11341)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

गाने और शराब का वबाल

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपनी किताब ''ज़म्मुल हवा'' में नक़्ल फ़रमाया है : एक शख़्स का बयान है कि एक रात

1... आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के होने वाले मुख़्तलिफ़ ऑडियो बयानात को तह़रीरी सूरत में बनाम ''**फ़ैज़ाने बयानाते अ़त्तार**'' अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे ''**बयानाते अमीरे अहले सुन्नत**'' की त़रफ़ से तरमीम व इज़ाफ़े के साथ पेश किया गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! उन बयानात में से अब शो'बा ''**हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़**'' एक बयान ''गानों की तबाह कारियां'' को रिसाले की सूरत में मन्ज़रे आ़म पर ला रहा है ।

मैं ने ख़्वाब में देखा कि मेरे घर के क़रीब जो क़ब्रिस्तान है उस के मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों से निकल आए हैं और एक जगह इकठ्ठे हो रहे हैं यहां तक कि तमाम अहले क़ुबूर एक जगह जम्अ़ हो गए, इस के बा'द उन्हों ने गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ कर दी और रो रो कर **अल्लाह** पाक की बारगाह में फ़रियाद करने लगे : ऐ **अल्लाह** ! फ़ुलां औ़रत जो सुब्ह़ मर गई है वोह हमारे क़ब्रिस्तान में दफ़्न न हो ! ऐ **अल्लाह** ! हमें उस बे अ़मल औ़रत की नुहूसत से बचा ले ! ख़्वाब देखने वाले साहिब कहते हैं कि मैं ने उन की गिर्या व ज़ारी सुन कर एक मुर्दे से पूछा : तुम येह दुआ क्यूं कर रहे हो ? वोह कहने लगा : जो औ़रत आज फ़ौत हुई है वोह जहन्नमी है लिहाज़ा अगर वोह हमारे क़ब्रिस्तान में दफ़्न कर दी गई तो हमें उस का अ़ज़ाब देखने की वज्ह से अज़िय्यत होगी, इस लिये हम आहो ज़ारी कर रहे हैं और **अल्लाह** पाक से गिड़गिड़ा कर दुआएं मांग रहे हैं कि वोह औ़रत हमारे क़ब्रिस्तान में दफ़्न न हो। ख़्वाब देखने वाले साहिब कहते हैं कि येह सुनते ही मेरी आंख खुल गई और मुझे तजस्सुस हुवा कि देखता हूं क्या होता है ? चुनान्चे मैं क़ब्रिस्तान की त़रफ़ जा निकला और वहां देखा कि गोरकन एक क़ब्र खोद चुके हैं। मैं ने उन से पूछा : तुम ने येह क़ब्र किस के लिये बनाई है ? वोह कहने लगे : एक मालदार की बीवी फ़ौत हो गई है, उस के लिये हम ने येह क़ब्र बनाई है। मैं ने गोरकनों को रात वाला ख़्वाब सुनाया तो उन्हों ने क़ब्र को बन्द कर दिया। अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि कुछ लोग आए और गोरकनों से पूछने लगे : क्या क़ब्र तय्यार हो गई है ? गोरकनों ने जवाब दिया : यहां क़ब्र नहीं बनेगी। गोरकनों का जवाब सुन कर वोह लोग दूसरे डेरे पर चले गए तो चूंकि वहां भी ख़्वाब वाली बात पहुंच चुकी थी इस

लिये दूसरे डेरे के गोरकनों ने भी क़ब्र खोदने से इन्कार कर दिया। अब वोह लोग किसी और क़ब्रिस्तान में चले गए और उन्हों ने वहां क़ब्र बनवाई। दूसरे क़ब्रिस्तान में क़ब्र खुदने के बा'द जनाज़े की आमद का इन्तिज़ार किया जाने लगा, इतने में शोर उठा कि जनाज़ा आ रहा है चुनान्चे मैं भी उस ख़ातून का जनाज़ा उठाने वालों के साथ जा मिला, जनाज़े के साथ अ़वाम का बहुत रश था, मैं ने जनाज़े के पीछे एक ख़ूब सूरत नौ जवान को देखा तो लोगों से उस के बारे में पूछा कि येह कौन है ? मुझे बताया गया कि येह इस मय्यित या'नी मर्हूमा का बेटा है। उस नौ जवान का बाप भी उस के साथ था और लोग उन दोनों बाप बेटे से ता'ज़ियत कर रहे थे। ख़्वाब देखने वाले साहिब कहते हैं कि जब उस ख़ातून को दफ़्न कर दिया गया तो मैं उन दोनों बाप बेटे के क़रीब गया और उन से कहा : मैं ने रात को एक ख़्वाब देखा है, अगर इजाज़त हो तो बयान करूं ? उस ख़ातून के शौहर ने जवाब दिया : मुझे ख़्वाब सुनने की कोई ज़रूरत नहीं और यूं उस ने मुझे टाल दिया लेकिन उस के नौ जवान बेटे ने कहा : आप मुझे ख़्वाब सुनाइये। मैं उस नौ जवान को लोगों से अलग एक जानिब ले गया और उसे अपना ख़्वाब बयान किया। फिर मैं ने उस नौ जवान से कहा : देखो ! क़ब्र वालों ने **अल्लाह** पाक से गिड़गिड़ा कर दुआ़एं की हैं कि तुम्हारी मां उन के क़ब्रिस्तान में दफ़्न न हो लिहाज़ा मुझे अपनी वालिदा के आ'माल के बारे में बताओ। वोह कहने लगा : मेरी मां शराब पीती थी, गाने बाजे सुनती थी और दीगर औ़रतों पर बोहतान लगाया करती थी। मैं अपनी वालिदा के बारे में येही कुछ जानता हूं, अगर आप मज़ीद पूछना चाहते हैं तो हमारे घर में एक बूढ़ी ख़ादिमा है जिस की उ़म्र 99 साल है, वोह मेरी मां की दाया

और ख़िदमत गुज़ार थी, आप मेरे साथ चल कर उन से पूछ लीजिये, शायद उसे मेरी मां के मज़ीद आ'माल मा'लूम हों। ख़्वाब देखने वाले साहिब कहते हैं कि मैं उस नौ जवान के साथ उस के घर पहुंचा और मैं ने उस बुढ़िया को अपना ख़्वाब सुना कर और उस मर्हूमा के बेटे से मिलने वाली मा'लूमात बता कर पूछा : आप मज़ीद क्या मा'लूमात दे सकती हैं ? बुढ़िया ने रो कर मुझ से कहा : **अल्लाह** पाक मर्हूमा की मग़्फ़िरत फ़रमाए, वोह बेचारी बहुत ज़ियादा गुनाहगार थी और फिर उस बुढ़िया ने मुझे मरने वाली ख़ातून के मज़ीद गुनाह बयान किये। (ذم الھوی، ص309)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह रिक़्क़त अंगेज़ वाक़िआ हमारे लिये अपने अन्दर बहुत कुछ इ़ब्रत का सामान रखता है। हमें भी अपनी मौत की त़रफ़ तवज्जोह रखनी चाहिये और अपने गुनाहों का एह़तिसाब करना चाहिये। देखिये ! उस औ़रत के तीन गुनाह बयान किये गए कि वोह शराब पीती थी, गाने बाजे सुनती थी और बोहतान तराशी करती थी। बद क़िस्मती से मुसल्मानों में शराब आ़म होती चली जा रही है, मर्द व औ़रत शराब पीने लगे हैं, बिल ख़ुसूस ऊंची सोसायटी से तअ़ल्लुक़ रखने वालों में مَعَاذَاللہ शराब नोशी और गाने बाजे जैसी बुराइयां बढ़ती जा रही हैं। याद रखिये ! शराब उम्मुल ख़बाइस या'नी बुराइयों की मां है। (صحیح ابن حبان، 7/367، حدیث:5324ملخصًا) क्यूं कि इस के ज़रीए इन्सान बहुत से गुनाहों में मुब्तला हो जाता है। नीज़ इस वाक़िए़ से येह भी पता चला कि जब क़ब्रिस्तान के आ़म मुर्दों को येह ग़ैबी ख़बर पता चल गई कि कोई औ़रत मर गई है, उस की लाश दफ़्न करने के लिये लाई जाने वाली है और उसे अ़ज़ाब भी दिया जाएगा तो फिर औलियाए किराम رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِم, अम्बियाए

किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام और बिल ख़ुसूस दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, नबियों के सरदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की अ़ता से क्यूं न ग़ैबों पर ख़बरदार हों ! जब मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मे'राज की रात सर की आंखों से, जागते हुए **अल्लाह** पाक का दीदार किया जो ग़ैबुल ग़ैब है तो फिर दीगर ग़ैब की चीज़ें आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क्यूंकर छुपी रह सकती हैं। आ़शिक़ों के इमाम, मेरे आक़ा इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त बयान करते हुए बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 264)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उस औ़रत का एक जुर्म येह था कि वोह गाने बाजे सुनती थी। आज कल गाने बाजे इस क़दर आ़म हो गए हैं कि गोया हर घर म्यूज़िक सेन्टर बन चुका है, कौन सा घर ऐसा है कि जिस के दरो दीवार गाने बाजों से न गूंजते हों। अब तो इन्टरनेट भी मुसल्मानों के घरों में दाख़िल हो गया है जिस के ज़रीए दुन्या भर की बुरी फ़िल्में देखी जा सकती हैं और ह़ालत येह है कि अगर बेटा इन्टरनेट के ज़रीए गन्दी फ़िल्में देख रहा हो तो मां बाप को पता तक नहीं चलता, यूं इन्टरनेट बहुत ज़ियादा तबाह कुन है। अगर्चे इन्टरनेट के मुस्बत (या'नी अच्छे) पहलू भी हैं मसलन मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयानात इन्टरनेट ही के ज़रीए सुने और देखे जाते हैं लेकिन लोगों की ग़ालिब अक्सरिय्यत इन्टरनेट के ज़रीए गुनाह कमाती है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी इन्टरनेट के मुस्बत पहलू से फ़वाइद ह़ासिल कर रही है।

गाने बाजों की तबाह कारियां

गाने बाजों की तबाह कारियां बहुत ज़ियादा हैं और क़ुरआनो ह़दीस में इन की मज़म्मत बयान फ़रमाई गई है, चुनान्चे पारह 21 **सूरए लुक़्मान** की आयत नम्बर 6 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِیْ لَهْوَ الْحَدِیْثِ لِیُضِلَّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ ۖ وَّ یَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ ۝

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कुछ लोग खेल की बात ख़रीदते हैं कि **अल्लाह** की राह से बहका दें बे समझे और उसे हंसी बना लें उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

इस आयते मुबारका के तह़्त तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है : येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस बिन कलदा के बारे में नाज़िल हुई जो कि तिजारत के सिल्सिले में दूसरे मुल्कों का सफ़र किया करता था। उस ने अ़जमी लोगों की क़िस्से कहानियों पर मुश्तमिल किताबें ख़रीदी हुई थीं और वोह कहानियां क़ुरैश को सुना कर कहा करता था कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तुम्हें आ़द और समूद के वाक़िआ़त सुनाते हैं और मैं तुम्हें रुस्तम, अस्फ़न्दयार और ईरान के शहन्शाहों की कहानियां सुनाता हूं। कुछ लोग उन कहानियों में मश्ग़ूल हो गए और क़ुरआने पाक सुनने से रह गए तो इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया : कुछ लोग खेल की बातें ख़रीदते हैं ताकि जहालत की बिना पर लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने और क़ुरआने करीम सुनने से रोकें और **अल्लाह** पाक की आयात का मज़ाक़ उड़ाएं, ऐसे लोगों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है। लह्व या'नी खेल, हर उस बात़िल को कहते हैं जो आदमी को नेकी से और काम की बातों से ग़फ़्लत में डाले। इस में बे मक़्सद व बे अस्ल और झूटे क़िस्से, कहानियां और अफ़्साने,

जादू, ना जाइज़ लतीफ़े और गाना बजाना वग़ैरा सब दाख़िल है। इस क़िस्म के आलात लह्वो लइब (या'नी वोह सामान जिन से येह काम किये जा सकते हों उन) को बेचना भी मन्अ़ है और ख़रीदना भी ना जाइज़ क्यूं कि येह आयत उन ख़रीदारों की बुराई बयान करने के बारे में ही उतरी है। इसी त़रह़ ना जाइज़ नॉविल, गन्दे रिसाले, सिनेमा के टिकट, तमाशे वग़ैरा के अस्बाब सब की ख़रीदो फ़रोख़्त मन्अ़ है कि येह तमाम "لَهْوَالْحَدِيْث" या उन के ज़राएअ़ हैं। इस आयत में "لَهْوَالْحَدِيْث" से मुतअ़ल्लिक़ मुमताज़ मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह है कि इस से मुराद गाना बजाना है और इस आयत को उ़लमाए किराम ने गाने बजाने के ह़राम होने की दलील के त़ौर पर बयान किया है। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, 7/474 मुल्तक़त़न)

मुझे आलाते मूसीक़ी और साज़ों को मिटाने का हुक्म दिया गया

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **अल्लाह** पाक ने मुझे तमाम जहानों के लिये रह़मत और हिदायत बना कर भेजा है, मुझे मुंह और हाथ से बजाए जाने वाले आलाते मूसीक़ी और साज़ों को मिटाने का हुक्म दिया है और उन बुतों को मिटाने का हुक्म फ़रमाया है जिन की ज़मानए जाहिलिय्यत में पूजा की जाती थी। मेरे रब ने अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम याद कर के फ़रमाया : मेरे बन्दों में से जिस ने शराब का एक घूंट पिया उस को इस के बदले जहन्नम का खौलता हुवा पानी पिलाऊंगा, ख़्वाह उसे अ़ज़ाब हो या बख़्शा जाए और जो शख़्स किसी बच्चे को शराब का घूंट पिलाएगा, उस पिलाने वाले को भी खौलता हुवा पानी पिलाऊंगा और गाने वाली औ़रतों की ख़रीदो फ़रोख़्त और गाने की ता'लीम व तिजारत और उन की क़ीमत ह़राम है। (مسند امام احمد، 8/286، حدیث:22281)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ! हम जिस प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का दम भरते हैं उन को उन के प्यारे **अल्लाह** पाक ने आलाते मूसीक़ी या'नी ढोल, त़बले, सारंगियों और बांसरियों वग़ैरा को मिटाने का हुक्म फ़रमाया है जब कि आज कई मुसल्मान मर्द व औ़रत इन मन्हूस आलात को ह़िर्ज़े जान बनाए हुए हैं । आह ! मेरे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم म्यूज़िक के आलात को मिटाना चाहते हैं मगर उन के नाम लेवाओं ने गली गली म्यूज़िक सेन्टर खोल रखे हैं, नहीं नहीं बल्कि आज तो मुसल्मानों के अक्सर घर म्यूज़िक सेन्टर बने हुए हैं । नीज़ इस ह़दीसे पाक में शराबियों के लिये भी दर्से इ़ब्रत है कि उन्हें जहन्नम का खौलता हुवा पानी पिलाया जाएगा जो इस क़दर ख़त़रनाक होगा कि जूंही पियाला उन के मुंह के क़रीब आएगा उस की तपिश के सबब मुंह की खाल गल कर पियाले में गिर पड़ेगी और फिर जब येह पानी पेट में पहुंचेगा तो तबाही मचा कर रख देगा यहां तक कि आंतों को टुकड़े टुकड़े कर के उन्हें पीछे के रास्ते बहा देगा । (ترمذی، 4/262، حدیث:2592 ملخصاً)

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

मेरी उम्मत की एक क़ौम को बन्दर और ख़िन्ज़ीर बना दिया जाएगा !

रसूलों के सालार, नबियों के सरदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : आख़िरी ज़माने में मेरी उम्मत की एक क़ौम को मस्ख़ कर के बन्दर और ख़िन्ज़ीर बना दिया जाएगा । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़्वाह वोह इस बात की गवाही देते

हों कि आप **अल्लाह** पाक के रसूल हैं और **अल्लाह** पाक के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं ! इर्शाद फ़रमाया : हां ! ख़्वाह वोह नमाज़ें पढ़ते हों, रोज़े रखते हों, ह़ज करते हों। (या'नी चाहे वोह मुसल्मान ही क्यूं न हों। तो ऐ नमाज़ें पढ़ने वालो ! तुम भी सुनो ! ऐ रोज़े रखने वालो ! तुम भी सुनो ! ऐ ह़ाजियो ! तुम भी सुनो ! अगर مَعَاذَاللہ गाने बाजे सुने तो क्या सज़ा मिलेगी, चुनान्चे बारगाहे रिसालत में) अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उन का जुर्म क्या होगा ? इर्शाद फ़रमाया : वोह औ़रतों का गाना सुनेंगे, बाजे बजाएंगे और शराब पियेंगे, इसी लह्वो लइब (या'नी खेलकूद) में वक़्त गुज़ारेंगे और सुब्ह़ बन्दर और ख़िन्ज़ीर बना दिये जाएंगे। (عمدۃ القاری، 14/593)

इसी त़रह़ एक और ह़दीसे पाक में है : मेरी उम्मत में ज़मीन में धंसा देने, पथ्थर बरसने और सूरतें मस्ख़ होने (या'नी सूरतें बिगड़ने) के वाक़िआ़त होंगे। मुसल्मानों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : येह कब होगा ? फ़रमाया : जब गाने वाली औ़रतें और गाने का सामान ज़ाहिर होगा और शराब पी जाएगी।

(ترمذی، 4/90، حدیث:2219)

गाना दिल में मुनाफ़क़त पैदा करता है

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : اَلْغِنَاءُ یُنْبِتُ النِّفَاقَ فِی الْقَلْبِ کَمَا یُنْبِتُ الْمَاءُ الزَّرْعَ या'नी गाना दिल में ऐसे मुनाफ़क़त पैदा करता है जैसे पानी खेती उगाता है।

(شعب الایمان، 4/279، حدیث:5100)

बरोज़े क़ियामत कानों में पिघला हुवा सीसा उंडेला जाएगा

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : مَنْ قَعَدَ اِلٰی قَیْنَۃٍ یَسْتَمِعُ مِنْھَا صَبَّ اللہُ فِیْ اُذُنَیْہِ الْاٰنُکَ

یَوْمَ الْقِیَامَۃِ या'नी जो शख़्स गाना सुनने के लिये किसी गाने वाली के पास बैठा, **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन उस के कानों में पिघला हुवा सीसा (Lead) उंडेलेगा। (ابن عساکر، 51/263)

गाना सुनना कैसा ?

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मज़ामीर (या'नी मूसीक़ी के आलात) के साथ गाना और उस का सुनना दोनों ह़राम हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 8/107) इसी त़रह़ गाना बजाना बल्कि गाने की आवाज़ रग़बत से सुनना दिली निफ़ाक़ इस त़रह़ पैदा करता है जैसे पानी का सैल (बहाव) घास को। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/428)

गाने सुनने के नुक़्सानात

﴾1﴿ गाने सुनना **अल्लाह** और रसूल को नाराज़ करने वाला काम है। ﴾2﴿ गाने सुनने से रूह़ कमज़ोर होती है। ﴾3﴿ गाने सुनने से दिल सियाह हो जाता है। ﴾4﴿ गाने सुनना कामिल मुसल्मान बनने में रुकावट है। ﴾5﴿ गाने सुनने से बुरी शह्वत और बुरे ख़यालात दिल में पैदा होते हैं। ﴾6﴿ गाने सुनने से इन्सान का ज़ेह्न बहक्ता और वोह ग़लत़ रास्तों पर चल पड़ता है। ﴾7﴿ गाने सुनने से इन्सान इश्क़े मजाज़ी का शिकार होता और बिल आख़िर नाकारा हो जाता है। ﴾8﴿ गाने सुनने से डिप्रेशन में इज़ाफ़ा होता और इन्सान ना उम्मीद हो जाता है। ﴾9﴿ गाने सुनने की वज्ह से इन्सान की त़बीअ़त में जज़्बाती और हैजानी कैफ़िय्यत पैदा होती है जो कभी कभी ख़ुदकुशी भी करवा देती है। ﴾10﴿ गाने सुनने वाले के कान के पर्दे भी मुतअस्सिर होते हैं जब कि क़ियामत के दिन उस के कानों में पिघला हुवा सीसा भी डाला जाएगा। ﴾11﴿ आज कल गानों में ऐसे

कुफ़्रिय्या कलिमात भी होते हैं जिन को कहने से इन्सान दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है और येह तो सब से बड़ा नुक़्सान है।

आह ! आज हमारे मुआ़शरे में मूसीक़ी राइज हो चुकी है

आह ! आज हमारे मुआ़शरे में मूसीक़ी राइज हो चुकी है और हर चीज़ में मूसीक़ी की धुनें सुनी जा रही हैं, आप बस, वेगन, हवाई जहाज़ और एरपोर्ट वग़ैरा जहां भी चले जाएं तक़रीबन हर जगह मूसीक़ी की धुन पाएंगे। ह़त्ता कि अगर आप रेडियो या टेलीवीज़न पर क़ुरआने पाक की तिलावत सुनना चाहें तो तिलावत का वक़्त शुरूअ़ होने से पहले मूसीक़ी की धुन बजाई जाती है। यूं ही मोबाइल फ़ोन में भी मूसीक़ी की ट्यून होती है और येह इतनी आ़म हो चुकी है कि बा'ज़ अवक़ात ब ज़ाहिर मज़्हबी नज़र आने वाले लोग भी अपने मोबाइल फ़ोन में म्यूज़ीकल ट्यून लगा लेते हैं। याद रहे ! जो सादा घन्टी बजती है वोह मूसीक़ी नहीं है।

मूसीक़ी से बचने का त़रीक़ा

ऐसी सूरते ह़ाल में मूसीक़ी से बचने का त़रीक़ा येह है कि आदमी जहां जहां मूसीक़ी को पाए उसे मिटाता चला जाए मसलन अपनी घड़ी में पाए तो घड़ी की ट्यून तब्दील कर दे, अपनी गाड़ी या मोबाइल फ़ोन में पाए तो उसे बदल दे, अगर बदलना मुम्किन न हो तो ट्यून ही को बन्द कर दे तो इस त़रह़ जहां जहां मूसीक़ी से बचना मुम्किन हो बचने की कोशिश करे। याद रखिये ! मूसीक़ी वाले गाने सुनना गुनाह है बल्कि कहीं से इस की आवाज़ आ रही हो तो वहां से हट जाना और न सुनने की भरपूर कोशिश करना ज़रूरी है, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा शामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : लचके तोड़े के साथ नाचना, मज़ाक़ उड़ाना, ताली बजाना, सितार के तार

बजाना, बरबत़, सारंगी, रबाब, बांसरी, क़ानून, झांझन, बिगल बजाना मक्रूहे तह़रीमी (या'नी क़रीब ब ह़राम) है क्यूं कि येह सब कुफ़्फ़ार के शिआ़र हैं, नीज़ बांसरी और दीगर साज़ों का सुनना भी ह़राम, अगर अचानक सुन लिया तो मा'ज़ूर है और इस पर वाजिब है कि न सुनने की पूरी कोशिश करे। (ردالمحتار، 9/651)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जूं ही मूसीक़ी की आवाज़ आए तो मुम्किना सूरत में फ़ौरन कानों में उंग्लियां दाख़िल कर के वहां से दूर हट जाना चाहिये। अगर उंग्लियां तो कानों में डाल दीं मगर वहीं खड़े या बैठे रहे या मा'मूली सा परे हट गए तो मूसीक़ी की आवाज़ से बच नहीं सकेंगे। उंग्लियां कानों में डाल कर न सही मगर किसी त़रह़ भी मूसीक़ी की आवाज़ से बचने की भरपूर कोशिश करना लाज़िम है।

आह ! आह ! आह ! अब तो सय्यारों, त़य्यारों, मकानों, दुकानों, होटलों, चौराहों, गलियों और बाज़ारों में जिस त़रफ़ भी जाइये मूसीक़ी की धुनें सुनाई देती हैं। जिस होटल में गाने और फ़िल्में ड्रामे चल रहे हों उस में खाना खाने, चाय पीने वग़ैरा से बचना चाहिये। बा'ज़ जगहों पर बन्दा मूसीक़ी से नहीं बच सकता मसलन जो हवाई जहाज़ में जा रहा है वोह नहीं बच पाएगा क्यूं कि वहां म्यूज़िक बन्द करवाना उस के बस का रोग नहीं है, इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात रोकने के बा वुजूद बस ड्राइवर नहीं मानता और वोह गाने बाजे चलाता है।

समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है

याद रखिये ! बस ड्राइवर्ज़ समझाए जाने पर गाने बाजे बन्द कर देते हैं लिहाज़ा ड्राइवर्ज़ को प्यार व मह़ब्बत से समझाइये, गाने बाजों की जगह

सुन्नतों भरे बयानात चलाने की तरग़ीब दिलाइये और उन का इस त़रह़ ज़ेह्न बनाइये कि अगर आप गाने बाजों की जगह सुन्नतों भरा बयान चला देंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه गाड़ी में मौजूद जितने मुसल्मान सुनेंगे उस का सवाब आप को भी मिलेगा तो यूं समझाने से اِنْ شَآءَاللّٰه फ़ाएदा होगा । देखिये ! हमें क़ुरआने पाक में भी समझाने का हुक्म दिया गया है चुनान्चे पारह 27 **सूरए ज़ारियात** की आयत नमबर 55 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ۝۵۵﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।" इसी त़रह़ जिस की घर में बात मानी जाती हो वोह अपने घर वालों का येह ज़ेह्न बनाए कि देखो ! गाने बाजे सुनने से आ़रिज़ी त़ौर पर कुछ सुरूर ह़ासिल होता है लेकिन चूंकि इस में गुनाह है इस लिये मैं इस सुरूर से पनाह मांगता हूं कि कहीं येह आ़रिज़ी सुरूर मुझे और आप सब को जहन्नम की गहराइयों में न झोंक दे लिहाज़ा गाने बाजे ख़त्म करने में ही आ़फ़ियत है। अगर कोई ख़ुद नहीं समझा सकता तो अपने मोबाइल फ़ोन के ज़रीए दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से दो सुन्नतों भरे बयानात "गाने बाजे की होलनाकियां" और "T.V की तबाह कारियां" डाउनलोड कर के अपने घर वालों को सुना दे या (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के) मदनी मुज़ाकरे दिखा दे और अगर येह मुम्किन नहीं तो फिर इन्ही दो बयानात को रिसाले की सूरत में दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कर के घर के अफ़राद को पढ़ कर सुना दे, اِنْ شَآءَاللّٰه घर में दीनी माह़ोल बनेगा और घर वाले गाने बाजों की तबाह कारियों से बचेंगे ।

याद रखिये ! फ़िल्में ड्रामे देखना और गाने बाजे सुनना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, अफ़्सोस ! अब तो फ़िल्मी गीत लिखने और गाने वाले इतने बे लगाम हो गए हैं कि इन्हों ने रब्बे काएनात पर भी ए'तिराज़ात शुरूअ़ कर दिये हैं। अपनी दुकानों और होटलों में गाने बजाने वालों, बसों और कारों में फ़िल्मी गीत चलाने वालों, शादियों में रीकॉर्डिंग चला कर बिस्तरों पर सिसक्ते पड़ोसी मरीज़ों और नेक हमसायों की आहें लेने वालों और बे सोचे समझे गाने गुनगुनाने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है। ज़रा सोचिये तो सही फ़िल्मी गानों में शैत़ान ने क्या क्या ज़ह़र घोल डाला है ! और लोगों को हमेशा हमेशा के लिये जहन्नमी और नारी बनाने के लिये किस क़दर अ़य्यारी व मक्कारी के साथ साज़ो आवाज़ के जादू का जाल बिछा डाला है। (गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र, स. 11, 12)

ईमान बरबाद हो गया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! क़त़ई कुफ़्र पर मब्नी एक भी शे'र जिस ने दिलचस्पी के साथ पढ़ा, सुना या गाया वोह कुफ़्र में जा पड़ा और इस्लाम से ख़ारिज हो कर काफ़िर व मुरतद हो गया, उस के तमाम नेक आ'माल अकारत हो गए या'नी पिछली सारी नमाज़ें, रोज़े, ह़ज वग़ैरा तमाम नेकियां ज़ाएअ़ हो गईं। शादी शुदा था तो निकाह़ भी टूट गया, अगर किसी का मुरीद था तो बैअ़त भी ख़त्म हो गई। उस पर फ़र्ज़ है कि उस शे'र में जो कुफ़्र है उस से फ़ौरन तौबा करे और कलिमा पढ़ कर नए सिरे से मुसल्मान हो, मुरीद होना चाहे तो अब नए सिरे से किसी भी जामेए़

शराइत़ पीर का मुरीद हो, अगर साबिक़ा बीवी को रखना चाहे तो दोबारा नए महर् के साथ उस से निकाह़ करे। जिस को येह शक हो कि मैं ने इस त़रह़ का शे'र दिलचस्पी के साथ गाया, सुना या पढ़ा होगा या मुझे फ़िल्मी गाने सुनने और गुनगुनाने की आ़दत है तो ऐसा शख़्स भी एह़तियात़न तौबा कर के नए सिरे से मुसल्मान हो जाए, नीज़ तजदीदे बैअ़त और तजदीदे निकाह़ कर ले कि इसी में दोनों जहां की भलाई है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 524)

(कुफ़्रिय्या गानों और उन से तौबा की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र" का मुत़ालआ़ करें।)

ईमां पे रब्बे रह़मत दे दे तू इस्तिक़ामत देता हूं वासित़ा मैं तुझ को तेरे नबी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 178)

न जाने हमारा ख़ातिमा कैसा हो !

एक त़वील ह़दीसे पाक में सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी इर्शाद फ़रमाया : औलादे आदम मुख़्तलिफ़ त़बक़ात पर पैदा की गई, इन में से बा'ज़ मोमिन पैदा हुए, ह़ालते ईमान पर ज़िन्दा रहे और मोमिन ही मरेंगे, बा'ज़ काफ़िर पैदा हुए, ह़ालते कुफ़्र पर ज़िन्दा रहे और काफ़िर ही मरेंगे जब कि बा'ज़ मोमिन पैदा हुए, मोमिनाना ज़िन्दगी गुज़ारी और ह़ालते कुफ़्र पर रुख़्सत हुए, बा'ज़ काफ़िर पैदा हुए, काफ़िर ज़िन्दा रहे और मोमिन हो कर मरेंगे। (ترمذی، 4/81، حدیث:2198)

क़ाबिले रश्क वोही है जो क़ब्र के अन्दर मोमिन है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में जीते जी मोमिन होना यक़ीनन बाइसे सआ़दत है मगर येह सआ़दत ह़क़ीक़त में उसी सूरत में सआ़दत है कि दुन्या से रुख़्सत होते वक़्त भी ईमान सलामत रहे। ख़ुदा की क़सम ! क़ाबिले रश्क वोही है जो क़ब्र के अन्दर भी मोमिन है। जी हां ! जो दुन्या से ईमान सलामत ले जाने में काम्याब हुवा वोही ह़क़ीक़ी मा'नों में काम्याब और जो जन्नत को पा ले वोही बा मुराद है, चुनान्चे पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 185 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है।

मेरा नाज़ुक बदन जहन्नम से अज़ तुफ़ैले रज़ा बचा या रब
कर दे जन्नत में तू जवार उन का अपने अ़त्तार को अ़ता या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 80, 81)

इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनें और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करें। इसी त़रह़ इस्लामी बहनें ख़ुद भी इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करें और अपने घर की दीगर इस्लामी बहनों मसलन वालिदा साहि़बा और भाभी वग़ैरा को भी शिर्कत की तरग़ीब दिलाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه गाने बाजों के साथ साथ दीगर गुनाहों से बचने का ज़ेह्न बनेगा और ख़ूब बरकतें ह़ासिल होंगी।

गाने सुनने की आ़दत हो तो कैसे ख़त्म की जाए ?

﴾1﴿ तमाम सोशल साइट्स या'नी फ़ेसबुक, वॉट्सअप, यू ट्यूब या ट्वीटर के एकाउन्ट्स और मेमोरी काड्र्ज़ (Memory Cards), कम्पयूटर सिस्टम वग़ैरा से Songs (या'नी गानों) और म्यूज़िक (Music) का डेटा Delete (या'नी ख़त्म) कर दीजिये। ﴾2﴿ गानों के बजाए तिलावत, ना'त और सुन्नतों भरे बयानात सुनने की तरकीब बनाइये, इस में दीन व दुन्या दोनों का फ़ाएदा है। ﴾3﴿ जितना हो सके **अल्लाह** पाक का ज़िक्र कीजिये, इज्तिमाआ़ते ज़िक्रो ना'त में शिर्कत कीजिये, दिल का मैल दूर होगा और रूहानिय्यत नसीब होगी। ﴾4﴿ रोज़ाना कम अज़ कम 313 मरतबा दुरूद पढ़ने का मा'मूल बना लीजिये, गुनाह से बचने की ता़क़त नसीब होगी। ﴾5﴿ गाने सुनने का शौक़ रखने वाले यार दोस्तों की संगत से फ़ौरन दूर हो जाइये और ज़िक्रो ना'त का शौक़ रखने वाले आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार कीजिये। ﴾6﴿ येह ज़ेह्न बनाइये कि आज अगर कान में मा'मूली दर्द भी हो जाए तो जीना ह़राम हो जाता है तो ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर गाने सुनने की वज्ह से कल बरोज़े क़ियामत मेरे कानों में सीसा उंडेला गया तो मेरा क्या बनेगा ? ﴾7﴿ गाने सुनने के Physically (या'नी जिस्मानी) नुक़्सानात भी पेशे नज़र रखिये कि गाने सुनना दर ह़क़ीक़त अपनी सिह़्ह़त से दुश्मनी है। ﴾8﴿ अपने ईमान की फ़िक्र कीजिये कि कहीं गाने सुनने से ख़ुदा न ख़्वास्ता ईमान बरबाद हो गया तो दीनो दुन्या की ज़िल्लतो रुस्वाई हमारा मुक़द्दर बन जाएगी।

नम्बर शुमार	फ़ेहरिस्त	सफ़हा नम्बर
1	गाने और शराब का वबाल	1
2	गाने बाजों की तबाह कारियां	6
3	मुझे आलाते मूसीक़ी और साज़ों को मिटाने का हुक्म दिया गया	7
4	मेरी उम्मत की एक क़ौम को बन्दर और ख़िन्ज़ीर बना दिया जाएगा !	8
5	गाना दिल में मुनाफ़क़त पैदा करता है	9
6	बरोज़े क़ियामत कानों में पिघला हुवा सीसा उंडेला जाएगा	9
7	गाना सुनना कैसा ?	10
8	गाने सुनने के नुक़्सानात	10
9	आह ! आज हमारे मुआ़शरे में मूसीक़ी राइज हो चुकी है	11
10	मूसीक़ी से बचने का त़रीक़ा	11
11	समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है	12
12	ईमान बरबाद हो गया	14
13	न जाने हमारा ख़ातिमा कैसा हो !	15
14	क़ाबिले रश्क वोही है जो क़ब्र के अन्दर मोमिन है	16
15	गाने सुनने की आ़दत हो तो कैसे ख़त्म की जाए ?	17

अगले हफ़्ते का रिसाला